180/23 सुखराम / ग्रा. पं. खोल

19.3.25	तकलीफ उपरान्त डाकों की मूल निगरानी बिल्कुल विवेचन के साथ आंशिक स्वीकार की जा चुकी है, के अनुसार प्रस्तुत प्रार्थना पत्र भी निर्णीत किया जाता है। पत्रावली फैसल शुमार हो। नियत से कम होकर दाखिल दफ्तर हो। अपर कलक्टर, नागौर	